किन व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया गया है और सरकार द्वारा ऐसे प्रशिक्षण पर कितनी राशि खर्च की गई है ?

इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री सन्तोष मोहन देव) :

(क) स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड के पास 6 वायुयान हैं इनका ब्यौरा निम्नानुसार है :—

क्र. सं.	स्टेशन-स्थान	वायुयान की किस्म	मूल लागत
1.	लोहा और इस्पात अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, "सेल", रांची	(1) क्वीन एयर-65	11,72,171.38
		(2) ट्विन बोनान्जा डी 50 ई	4,39,478.59
2.	इस्को, बर्नपुर	(1) क्वीन एयर	9,18,262.04
		(2) ट्विन बोनान्जा	6,46,781.84
3.	भिलाई	किंग एयर एफ-90	2,80,10,366.0
4.	बोकारो	सुपरकिंग एयर-बी-200	3.9 करोड़ (लगभग)

(ख) "सेल" ने सूचित किया है कि इन वायुयानों पर गैर-सरकारी व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने का कोई प्रावधान नहीं है। श्री एस.बी. सिंह, जिसके पास प्राइवेट पायलट लाइसेंस था, ने बोकारो स्टील संयंत्र का वायुयान, वायुयान उड़ाने की अनुमति के लिए आवेदन करने के बाद कुछ घंटे (9 घंटे 55 मिनट) निगरानी में उड़ाया था। बोकारो इस्पात संयंत्र द्वारा 'सेल' निगमित कार्यालय को किया गया अनुरोध स्वीकार नहीं किया गया था। अतः बोकारो इस्पात संयंत्र द्वारा प्रणोदन की लागत के रूप में श्री एस.बी. सिंह से 21,600/- रु. वसूल किए गए थे।

Cases of Corruption and Irregularities in Steel Companies/Undertakings

2136. SHRI GHUFRAN AZAM : Will the Minister of STEEL be pleased to state :

(a) whether it is a fact that several cases of corruption and charges of irregularities have been found against some senior officers of different companies/Undertakings till 30th April, 1993 under his Ministry;

(b) whether it is a fact that the number of cases have been on increase compared to previous three years;

(c) whether Government have found out ways to deal with cases of corruption expeditiously; and

(d) if so, the details thereof ?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF STEEL (SHRI SANTOSH MOHAN DEV): (a) to (d) The Vigilance Unit in the Ministry of Steel deals with the vigilance cases of only the Board-level officers of Public Sector Undertakings (PSUs). There has been no case in which the Ministry was required to proceed against any Board level officer of Public Sector Undertakings (PSUs) on charges of corruption/irregularities during the last three years and upto 30th April, 1993. Action on cases against below Board-level officials, where necessary, is taken by the PSUs themselves, as per the existing procedure.

इस्पात की उत्पादन लागत

2137. **श्रीमती सुषमा स्वराज** :

श्री राम जेठमलानी : क्या **इस्पात मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि हमारे देश में इस्पात की उत्पादन लागत अन्य देशों की तुलना में अधिक है ;

(ख) यदि हां, तो क्या हम पिछले चार दशकों के दौरान इस्पात के उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि नहीं कर पाए हैं, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इस्पात के मूल्य की तुलना में हमारा इस्पात महंगा होता है;

(ग) क्या यह भी सच है कि हमारे देश में इस्पात के उत्पादन के लिए उपयोग में लाई जाने वाली प्रौद्योगिकी अन्य प्रतिस्पर्द्धी देशों में उपयोग में लाई जाने वाली प्रौद्योगिकी से भिन्न है;

(घ) क्या यह भी सच है कि देश में इस्पात के उत्पादन की प्रौद्योगिकी भू.पू. सोवियत संघ के सहयोग से स्थापित की गई थी जो महंगी साबित हो रही है;

(ङ) क्या यह भी सच है कि सरकार द्वारा अनेकों कर और उपकर लगाए गए हैं ताकि हमारे देश के इस्पात का मूल्य अन्य देशों के इस्पात के मूल्य के बराबर हो सके; और

(च) यदि हां, तो गत वर्षों में इस्पात की उत्पादन लागत में कमी लाने के प्रयास न किए जाने के क्या कारण हैं ?

इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री सन्तोष मोहन देव) : (क) अन्य देशों में इस्पात की उत्पादन लागत से संबंधित किसी प्रमाणित सूचना के उपलब्ध न होने से भारत में इस्पात के उत्पादन की लागत की अन्य देशों में इस्पात के उत्पादन की लागत से तुलना करना संभव नहीं है।

(ख) देश में अपरिष्कृत इस्पात के उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। अपरिष्कृत इस्पात का उत्पादन वर्ष 1951 में लगभग 15 लाख टन था जो 1992-93 में बढ़कर लगभग 181.6 लाख टन हो गया।

(ग) विकसित देशों में इस्पात संयंत्र मुख्यतया बेसिक आक्सीजन फर्नेस और सतत ढलाई प्रौद्योगिकी में परिवर्तित हो गए, जबकि भारत में अधिकांश पुराने एकीकृत इस्पात संयंत्र अभी भी ओपन हर्थ फर्नेस/ट्विन हर्थ फर्नेस और पिंड ढलाई पद्धति का भिन्न-भिन्न मात्रा में उपयोग कर रहे हैं। ऐसे इस्पात संयंत्रों द्वारा प्रौद्योगिकीय उन्नयन और आधुनिकीकरण के लिए योजनाएं शुरू की गई हैं।

(घ) स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) के भिलाई और बोकारो इस्पात संयंत्र विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र (वी.एस.पी. तत्कालीन सोवियत संघ के सहयोग से स्थापित किए गए थे। विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र में हाल ही में उत्पादन शुरू हो गया है। तत्कालीन सोवियत संघ के सहयोग से स्थापित सेल के संयंत्रों द्वारा उत्पादित इस्पात के उत्पादन की लागत की तुलना अन्य विकसित देशों की उत्पादन लागत से नहीं की जा सकती, क्योंकि उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकी, आदानों के मूल्य, उत्पाद-मिश्र तथा सांविधिक लेवियों आदि की मात्रा में अन्तर है।

(ङ) विभिन्न देशों में इस्पात के मूल्यों में अन्तर होता है तथा एक ही देश में विभिन्न उत्पादकों के मूल्यों में भी अन्तर रहता है। सरकार द्वारा कर आदि विभिन्न प्रयोजनों के लिए लगाए जाते हैं न कि इस्पात के मूल्यों को अन्य देशों के मूल्यों के बराबर करने के लिए।

(च) इस्पात की उत्पादन लागत में कमी करने के लिए सरकारी क्षेत्र के इस्पात संयंत्रों द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इस्पात की उत्पादन लागत में कमी करने के लिए संयंत्रों का आधुनिकीकरण, तकनीकी-आर्थिक प्राचलों में सुधार जो उत्पादन की वर्धित क्षमता को प्रभावित करता है, उत्पाद-मिश्र का विविधीकरण, पुनःप्रशिक्षण और पुनः तैनाती सहित श्रम-शक्ति को युक्तिसंगत करना, दूसरे खर्चों सहित ऊर्जा खपत और पेट्रोल ईंधन खपत में कमी करने जैसे अनेक कदम उठाए जा रहे हैं।

Commercialisation of Residential Houses

2138. SHRIMATI SARALA MAHESHWARI : Will the Minister of URBAN DEVELOPMENT be pleased to state :

(a) whether it is a fact that Government have announced the commercialisation of the residential houses on the main roads, having 80 ft. wide road, and if so, the reasons therefor;

(b) whether it is also a fact that the houses on the main road of Aurobindo Marg specially in Green Park and Malviya Nagar, New Delhi are also covered under the above mentioned scheme;